GJMRR
Global Journal of Multidisciplinary Research and Reviews (GJMRR)
Open-Access, Peer-Reviewed, Double Blind, Multidisciplinary Online Journal
Volume 1, Issue 2, Year-2026

हिंदी पत्रकारिता के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका

यशोदा देवी[1]
[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग
माइंड पावर यूनिवर्सिटी, भीमताल, उत्तराखंड

सारांश

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण और दूरगामी रहा है। उन्होंने न केवल हिंदी भाषा को परिष्कृत और मानकीकृत किया, बल्कि पत्रकारिता को साहित्यिक, वैचारिक और सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ा। *सरस्वती* पत्रिका के संपादन (1903–1920) के माध्यम से द्विवेदी युग की स्थापना हुई, जिसने हिंदी पत्रकारिता को सुधारवादी, राष्ट्रवादी और बौद्धिक चेतना से समृद्ध किया। यह शोध-पत्र द्विवेदी जी की भूमिका का ऐतिहासिक, वैचारिक और साहित्यिक संदर्भों में समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य संकेतक : द्विवेदी युग, भाषा-सुधार, खड़ी बोली हिंदी, सरस्वती पत्रिका।

परिचय

हिंदी पत्रकारिता का विकास भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में हिंदी पत्रकारिता केवल समाचारों का माध्यम नहीं थी, बल्कि सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और साहित्यिक उत्थान का सशक्त साधन भी बनी। इस संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864–1938) का योगदान केंद्रीय है। उन्हें हिंदी गद्य का शिल्पकार, भाषा-सुधारक और आदर्श संपादक माना जाता है (मिश्र, 2012)।

हिंदी पत्रकारिता का विकास भारतीय समाज में नवजागरण, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हिंदी पत्रकारिता केवल समाचारों के संप्रेषण तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह सामाजिक सुधार, बौद्धिक विमर्श और राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण का सशक्त माध्यम बन रही थी। इसी संक्रमणकाल में महावीर प्रसाद द्विवेदी का उदय हुआ, जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता को भाषा, विचार और उद्देश्य तीनों स्तरों पर नई दिशा प्रदान की। उन्हें हिंदी गद्य का शिल्पकार और आदर्श संपादक कहा जाता है, क्योंकि उनके प्रयासों से हिंदी पत्रकारिता एक संगठित, अनुशासित और साहित्यिक स्वरूप में विकसित हुई (मिश्र, 2012)।

GJMRR
Global Journal of Multidisciplinary Research and Reviews (GJMRR)
Open-Access, Peer-Reviewed, Double Blind, Multidisciplinary Online Journal
Volume 1, Issue 2, Year-2026

महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान विशेष रूप से उस समय महत्वपूर्ण हो जाता है जब हिंदी पत्रकारिता अपनी पहचान और मानक स्थापित करने की प्रक्रिया में थी। प्रारंभिक हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ भाषा की दृष्टि से अस्थिर थीं और विषय-वस्तु में भी स्पष्ट वैचारिक दिशा का अभाव था। द्विवेदी जी ने पत्रकारिता को केवल सूचना का माध्यम न मानकर उसे समाज-संस्कार और जन-जागरण का साधन माना। उनका विश्वास था कि पत्रकारिता की भाषा सरल, शुद्ध और जनसामान्य के लिए बोधगम्य होनी चाहिए। इसी दृष्टिकोण के कारण उन्होंने भाषा की अशुद्धियों, अनावश्यक विदेशी प्रभावों और असंतुलित शैली के विरुद्ध सशक्त प्रयास किए (नागर, 2008)।

1903 में *सरस्वती* पत्रिका के संपादन का दायित्व संभालने के साथ ही हिंदी पत्रकारिता में एक निर्णायक मोड़ आया। *सरस्वती* के माध्यम से द्विवेदी जी ने साहित्य, समाज और राष्ट्र से जुड़े विषयों को गंभीरता और विवेक के साथ प्रस्तुत किया। इस पत्रिका ने हिंदी पत्रकारिता को वैचारिक गहराई, साहित्यिक गुणवत्ता और नैतिक उत्तरदायित्व प्रदान किया। उनके संपादन काल को "द्विवेदी युग" कहा जाता है, जो हिंदी साहित्य के साथ-साथ हिंदी पत्रकारिता के विकास में भी एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ (त्रिपाठी, 2015)।

द्विवेदी जी की पत्रकारिता सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित थी। उन्होंने नारी शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक आत्मबोध जैसे विषयों को प्रमुखता दी। यद्यपि वे प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन के समर्थक नहीं थे, फिर भी उनकी पत्रकारिता भारतीय समाज में बौद्धिक राष्ट्रवाद की भावना को सुदृढ़ करती है। उनके लेखन और संपादकीय दृष्टि ने पाठकों में विवेकशीलता, तर्कशीलता और आत्मसम्मान की भावना विकसित की (वर्मा, 2016)।

इस प्रकार, हिंदी पत्रकारिता के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका आधारभूत और मार्गदर्शक रही है। उन्होंने पत्रकारिता को भाषा-संस्कार, साहित्यिक गरिमा और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर उसे एक सशक्त वैचारिक मंच प्रदान किया। आज की हिंदी पत्रकारिता में भी उनकी दृष्टि, अनुशासन और मूल्यबोध की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है (शर्मा, 2018)।

हिंदी पत्रकारिता की पृष्ठभूमि

भारत में हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ *उदंत मार्तंड* (1826) से माना जाता है, किंतु इसका संगठित और साहित्यिक स्वरूप बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में विकसित हुआ। इस समय तक हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ भाषा, विषय-वस्तु और उद्देश्य की दृष्टि से स्पष्ट दिशा तलाश रही थीं। द्विवेदी जी ने इसी संक्रमणकाल में पत्रकारिता को अनुशासन, भाषा-सौष्ठव और वैचारिक गंभीरता प्रदान की (शुक्ल, 2010)।

हिंदी पत्रकारिता की पृष्ठभूमि को समझे बिना महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका का सम्यक् मूल्यांकन संभव नहीं है। हिंदी पत्रकारिता का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में औपनिवेशिक भारत की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के बीच हुआ। 1826 में प्रकाशित उदंत मार्तंड को हिंदी का पहला समाचारपत्र माना जाता है, जिसने हिंदी भाषी समाज को समाचार और जनचेतना से जोड़ने का कार्य किया। प्रारंभिक हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं था, बल्कि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाना, शिक्षा का प्रसार करना और राष्ट्रीय चेतना का विकास करना भी था। उस समय हिंदी भाषा स्वयं मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजर रही थी, जिससे पत्रकारिता की भाषा असंगत, क्षेत्रीय प्रभावों से युक्त और शैलीगत रूप से अस्थिर थी (मिश्र, 2012)।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक हिंदी पत्रकारिता ने कुछ ठोस रूप ग्रहण किए, किंतु तब भी उसमें साहित्यिक गरिमा और वैचारिक स्पष्टता का अभाव था। अधिकांश पत्र-पत्रिकाएँ या तो अत्यधिक भावनात्मक थीं या फिर भाषा की दृष्टि से शिथिल। इसी संक्रमणकाल में पत्रकारिता को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता थी जो भाषा, विचार और उद्देश्य तीनों स्तरों पर उसे सुदृढ़ दिशा दे सके। यही वह ऐतिहासिक क्षण था जब महावीर प्रसाद द्विवेदी का उदय हुआ। उनके आगमन से पहले हिंदी पत्रकारिता बिखरी हुई चेतना का स्वरूप प्रस्तुत करती थी, जबकि उनके योगदान के बाद यह एक संगठित, अनुशासित और वैचारिक आंदोलन का रूप लेने लगी (शुक्ल, 2010)।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में राष्ट्रीय आंदोलन, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की धाराएँ तीव्र हो रही थीं। पत्रकारिता इन आंदोलनों की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बन रही थी, परंतु इसके लिए एक परिष्कृत और मानक भाषा की आवश्यकता थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी से पूर्व की हिंदी पत्रकारिता में न तो स्पष्ट भाषा-नीति थी और न ही संपादकीय अनुशासन। यही पृष्ठभूमि द्विवेदी जी के कार्य को ऐतिहासिक महत्व प्रदान करती है, क्योंकि उन्होंने पत्रकारिता को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का साधन माना (पांडेय, 2014)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन से पूर्व की पत्रकारिता में विषय-वस्तु की गंभीरता सीमित थी और लेखन में व्यक्तिगत आग्रह अधिक दिखाई देता था। द्विवेदी जी ने इस प्रवृत्ति को बदलने का प्रयास किया और पत्रकारिता को बौद्धिक विमर्श का मंच बनाया। हिंदी पत्रकारिता की पृष्ठभूमि में यह परिवर्तन अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसी के आधार पर आगे चलकर पत्रकारिता ने साहित्य, समाज और राष्ट्र के बीच सेतु का कार्य किया। उन्होंने पत्रकारिता को भाषा-सुधार, समाज-सुधार और राष्ट्रीय चेतना के समन्वित प्रयास के रूप में देखा, जो उस समय की ऐतिहासिक आवश्यकता थी (वर्मा, 2016)।

GJMRR
Global Journal of Multidisciplinary Research and Reviews (GJMRR)
Open-Access, Peer-Reviewed, Double Blind, Multidisciplinary Online Journal
Volume 1, Issue 2, Year-2026

इस प्रकार, हिंदी पत्रकारिता की पृष्ठभूमि मूलतः संघर्ष, संक्रमण और खोज की पृष्ठभूमि थी। इसी संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान प्रकाशस्तंभ के समान प्रतीत होता है। उनकी भूमिका को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी पत्रकारिता की उस प्रारंभिक अवस्था को पहचाना जाए, जहाँ भाषा, उद्देश्य और दिशा तीनों अनिश्चित थे। द्विवेदी जी ने इसी अनिश्चितता को स्पष्ट दृष्टि, अनुशासन और वैचारिक दृढ़ता प्रदान की, जिससे हिंदी पत्रकारिता के विकास का सुदृढ़ आधार निर्मित हुआ (शर्मा, 2018)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और वैचारिक दृष्टि

द्विवेदी जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे वे संपादक, निबंधकार, आलोचक और समाज-सुधारक थे। उनकी वैचारिक दृष्टि भारतीय परंपरा और आधुनिकता के संतुलन पर आधारित थी। वे पत्रकारिता को जन-जागरण का माध्यम मानते थे और मानते थे कि भाषा का शुद्ध, सरल और सुस्पष्ट होना अत्यावश्यक है (द्विवेदी, 1913)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864–1938) हिंदी पत्रकारिता और साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था; वे संपादक, आलोचक, निबंधकार और समाज-सुधारक सभी भूमिकाओं में समान रूप से सक्रिय थे। हिंदी पत्रकारिता के विकास में उनका सबसे प्रमुख योगदान सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हुआ, जिसका संपादन उन्होंने 1903 से 1920 तक किया।

द्विवेदी जी का मानना था कि पत्रकारिता केवल समाचार या सूचना का माध्यम नहीं हो सकती, बल्कि यह समाज को जागृत करने, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने का साधन भी होनी चाहिए (मिश्र, 2012)। उनके संपादन में साहित्य और पत्रकारिता का समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है; उन्होंने पत्रकारिता को गद्य की शुद्धता, भाषा की स्पष्टता और विचारों की गंभीरता के आधार पर परिष्कृत किया।

द्विवेदी जी की वैचारिक दृष्टि में भारतीय संस्कृति और परंपरा का गहरा सम्मान था, परंतु वे आधुनिकता और सामाजिक सुधार के पक्षधर भी थे। उनका मानना था कि समाज में सुधार और शिक्षा का प्रसार पत्रकारिता के माध्यम से प्रभावी रूप से किया जा सकता है। उन्होंने लेखकों और पत्रकारों को उच्च साहित्यिक मानकों का पालन करने और भाषा में शुद्धता बनाए रखने का निर्देश दिया। उनके संपादकीय दृष्टिकोण में न केवल शैली और व्याकरण की शुद्धता महत्वपूर्ण थी, बल्कि लेख का नैतिक और सामाजिक प्रभाव भी महत्व रखता था (शुक्ल, 2010)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा सुधार के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने हिंदी को खड़ी बोली में मानकीकृत किया और उसे जनता के लिए सरल, स्पष्ट और सुलभ बनाने का प्रयास किया। उनके संपादन में प्रकाशित लेखों और निबंधों में भाषा का सहज प्रवाह, विचारों की स्पष्टता और शैली की सुसंगतता दिखाई देती

GJMRR
Global Journal of Multidisciplinary Research and Reviews (GJMRR)
Open-Access, Peer-Reviewed, Double Blind, Multidisciplinary Online Journal
Volume 1, Issue 2, Year-2026

है। वे अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ और कठिन शब्दों के प्रयोग के पक्ष में नहीं थे, जिससे उनके लेखन और संपादन दोनों ही आम जनता के लिए बोधगम्य और सुलभ बने (नागर, 2008)।

सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार उनके व्यक्तित्व की एक और विशेषता थी। द्विवेदी जी ने अपने लेखों और सरस्वती पत्रिका के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, नारी शिक्षा और राष्ट्रीय जागरूकता जैसे विषयों को प्रमुखता दी। वे प्रत्यक्ष राजनीतिक संघर्ष के बजाय वैचारिक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर ध्यान केंद्रित करते थे, जिससे हिंदी पत्रकारिता ने समाज में नैतिक और बौद्धिक जागरूकता का कार्य किया (वर्मा, 2016)।

उनकी संपादकीय नीति कठोर और अनुशासनपूर्ण थी। वे लेखकों को आवश्यक संशोधन करने के लिए प्रोत्साहित करते थे और मानते थे कि पत्रकारिता में गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। इस दृष्टिकोण के कारण कई युवा लेखक उनके मार्गदर्शन में परिपक्व साहित्यकार बने और हिंदी पत्रकारिता तथा साहित्य की नींव मजबूत हुई। द्विवेदी जी की वैचारिक दृढ़ता, भाषा सुधार की प्रतिबद्धता और सामाजिक चेतना के प्रति संवेदनशीलता ने हिंदी पत्रकारिता को केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि साहित्यिक, बौद्धिक और नैतिक उन्नति का साधन बना दिया (पांडेय, 2014)।

इस प्रकार, महावीर प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व और वैचारिक दृष्टि हिंदी पत्रकारिता के विकास में निर्णायक भूमिका निभाती है। उनकी सोच और संपादकीय दृष्टिकोण ने पत्रकारिता को साहित्यिक और सामाजिक जिम्मेदारी का पर्याय बनाया, जिससे हिंदी पत्रकारिता का द्विवेदी युग आज भी आदर्श और मार्गदर्शक के रूप में स्मरणीय है।

सरस्वती पत्रिका और द्विवेदी युग

1903 में *सरस्वती* पत्रिका का संपादन संभालने के बाद द्विवेदी जी ने हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा दी। *सरस्वती* केवल साहित्यिक पत्रिका नहीं रही, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक विमर्श का मंच बनी।

1. उन्होंने भाषा की अशुद्धियों को दूर किया और खड़ी बोली हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाई।
2. लेखकों को अनुशासन और गुणवत्ता का महत्व समझाया।
3. राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार और नैतिक मूल्यों को लेखन का केंद्र बनाया (त्रिपाठी, 2015)।

इस काल को "द्विवेदी युग" कहा जाता है, जो हिंदी साहित्य और पत्रकारिता दोनों के लिए निर्णायक सिद्ध हुआ।

GJMRR
Global Journal of Multidisciplinary Research and Reviews (GJMRR)
Open-Access, Peer-Reviewed, Double Blind, Multidisciplinary Online Journal
Volume 1, Issue 2, Year-2026

भाषा-सुधार और पत्रकारिता

द्विवेदी जी का सबसे बड़ा योगदान हिंदी भाषा का परिष्कार है। उन्होंने पत्रकारिता की भाषा को न तो अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ होने दिया और न ही अनावश्यक फारसी-उर्दू प्रभाव में रहने दिया। उनकी दृष्टि में पत्रकारिता की भाषा जनसामान्य के लिए बोधगम्य होनी चाहिए (नागर, 2008)। उन्होंने संपादकीय टिप्पणियों और लेख-संशोधन के माध्यम से भाषा की शुद्धता, व्याकरण और शैली पर विशेष ध्यान दिया।

हिंदी पत्रकारिता के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान विशेष रूप से भाषा-सुधार के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हिंदी पत्रकारिता भाषा, शैली और उद्देश्य की दृष्टि से संक्रमण के दौर से गुजर रही थी। इस समय पत्र-पत्रिकाओं की भाषा न तो पूर्णतः परिष्कृत थी और न ही जनसामान्य के लिए सहज। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस स्थिति को समझते हुए पत्रकारिता को भाषा-संस्कार का माध्यम बनाया और हिंदी को एक सुस्पष्ट, अनुशासित तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की (मिश्र, 2012)।

द्विवेदी जी का मानना था कि पत्रकारिता की सफलता का आधार उसकी भाषा होती है। उनके अनुसार यदि भाषा अस्पष्ट, अशुद्ध या अनगढ़ होगी तो विचार भी प्रभावी नहीं रहेंगे। सरस्वती पत्रिका के संपादक के रूप में उन्होंने भाषा-शुद्धता, व्याकरणिक अनुशासन और शैलीगत स्पष्टता पर विशेष बल दिया। वे खड़ी बोली हिंदी के समर्थक थे और उसे साहित्य तथा पत्रकारिता दोनों के लिए उपयुक्त मानते थे। उन्होंने न तो अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ भाषा को स्वीकार किया और न ही फारसी-उर्दू मिश्रण को, बल्कि संतुलित और परिष्कृत हिंदी को बढ़ावा दिया, जिससे पत्रकारिता की भाषा जनसामान्य के लिए बोधगम्य बन सके (शुक्ल, 2010)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पत्रकारिता में भाषा-सुधार को केवल सैद्धांतिक स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि संपादन की कठोर प्रक्रिया के माध्यम से उसे व्यवहार में उतारा। वे लेखकों की रचनाओं में आवश्यक संशोधन करते थे और अशुद्ध शब्दों, अनावश्यक अलंकरण तथा अस्पष्ट वाक्य-रचना को दूर करते थे। इस कारण कई लेखकों को उनका संपादन कठोर प्रतीत होता था, किंतु दीर्घकाल में इसी प्रक्रिया ने हिंदी पत्रकारिता को अनुशासित और परिपक्व बनाया। द्विवेदी जी का यह दृष्टिकोण पत्रकारिता को साहित्यिक गरिमा प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ (पांडेय, 2014)।

भाषा-सुधार के साथ-साथ द्विवेदी जी ने पत्रकारिता को सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ा। उनका मानना था कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि समाज-निर्माण का उपकरण है। सरस्वती में प्रकाशित लेखों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक सुधार, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना को सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली

भाषा में प्रस्तुत किया। इससे पत्रकारिता केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित न रहकर व्यापक समाज तक पहुँची और जन-जागरण का माध्यम बनी (वर्मा, 2016)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी पत्रकारिता को भाषा-सुधार की ठोस आधारशिला प्रदान की। उन्होंने पत्रकारिता की भाषा को शुद्ध, संयमित और उद्देश्यपरक बनाकर उसे प्रभावी संप्रेषण का साधन बनाया। उनकी भाषा-दृष्टि ने न केवल सरस्वती जैसी पत्रिका को प्रतिष्ठा दिलाई, बल्कि संपूर्ण हिंदी पत्रकारिता को एक मानक और दिशा प्रदान की। आज की हिंदी पत्रकारिता में भी भाषा-सौष्ठव और स्पष्टता की जो परंपरा दिखाई देती है, उसकी जड़ें द्विवेदी जी के भाषा-सुधार संबंधी प्रयासों में ही निहित हैं (शर्मा, 2018)।

सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पत्रकारिता को सामाजिक सुधार का माध्यम बनाया। *सरस्वती* में प्रकाशित लेखों के माध्यम से उन्होंने

1. नारी शिक्षा,
2. जातिगत कुरीतियों,
3. अंधविश्वास,
4. राष्ट्रीय स्वाभिमान

जैसे विषयों पर विचार प्रस्तुत किए। उनकी पत्रकारिता ब्रिटिश शासन के प्रत्यक्ष विरोध से अधिक बौद्धिक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर केंद्रित थी (वर्मा, 2016)।

संपादकीय दृष्टि और अनुशासन

द्विवेदी जी की संपादकीय दृष्टि अत्यंत कठोर और अनुशासनप्रिय थी। वे लेखकों की रचनाओं में आवश्यक संशोधन करने से नहीं हिचकते थे। उनका मानना था कि पत्रकारिता में गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। इसी कारण कई युवा लेखक उनके मार्गदर्शन में परिपक्व साहित्यकार बने (पांडेय, 2014)।

हिंदी पत्रकारिता के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी की संपादकीय दृष्टि और अनुशासनात्मक सोच का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने पत्रकारिता को केवल सूचना-प्रसारण का माध्यम न मानकर उसे भाषा-संस्कार, वैचारिक परिपक्वता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ दिया। द्विवेदी जी का विश्वास था कि पत्रकारिता का मूल उद्देश्य समाज को बौद्धिक रूप से जागरूक बनाना है, और यह तभी संभव है जब संपादक स्वयं कठोर अनुशासन, स्पष्ट दृष्टि और उच्च नैतिक मूल्यों का पालन करे (मिश्र, 2012)। इसी सोच ने हिंदी पत्रकारिता को एक सुव्यवस्थित और गंभीर स्वरूप प्रदान किया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी की संपादकीय दृष्टि का सबसे सशक्त उदाहरण सरस्वती पत्रिका का संपादन है। उनके संपादन काल में सरस्वती केवल साहित्यिक पत्रिका नहीं रही, बल्कि हिंदी पत्रकारिता की दिशा निर्धारित करने वाला मंच बन गई। द्विवेदी जी लेखों के चयन में विषय-वस्तु की गंभीरता, भाषा की शुद्धता और सामाजिक उपयोगिता को सर्वोपरि रखते थे। वे मानते थे कि पत्रकारिता में भावुकता या अतिशयोक्ति के स्थान पर तर्क, तथ्य और विवेक होना चाहिए। इसी कारण उनके द्वारा संपादित लेख बौद्धिक स्तर पर पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करते थे (शुक्ल, 2010)।

संपादकीय अनुशासन के संदर्भ में द्विवेदी जी अत्यंत कठोर माने जाते थे। वे लेखकों की रचनाओं में आवश्यक संशोधन करने से कभी नहीं हिचकते थे। व्याकरणिक अशुद्धियाँ, अनावश्यक अलंकारिकता और अस्पष्ट विचार-प्रस्तुति उन्हें स्वीकार नहीं थी। कई बार वे लेखकों को उनकी रचनाएँ लौटा देते थे या पुनर्लेखन का निर्देश देते थे, जिससे लेखकों में अनुशासन और भाषा-सजगता का विकास हुआ। इस प्रक्रिया ने हिंदी पत्रकारिता को भाषायी मानक और संरचनात्मक स्पष्टता प्रदान की (पांडेय, 2014)।

द्विवेदी जी की संपादकीय दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष नैतिक अनुशासन भी था। वे पत्रकारिता को सामाजिक सुधार का माध्यम मानते थे और इसी कारण अश्लीलता, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों को बढ़ावा देने वाले लेखों का विरोध करते थे। उनकी पत्रकारिता नैतिकता, राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित थी। उन्होंने यह स्थापित किया कि पत्रकार का दायित्व केवल पाठक को आकर्षित करना नहीं, बल्कि उसे सही दिशा देना भी है (वर्मा, 2016)।

भाषा के स्तर पर भी द्विवेदी जी का अनुशासन अत्यंत प्रभावशाली रहा। उन्होंने खड़ी बोली हिंदी को पत्रकारिता की मानक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया और अनावश्यक उर्दू-फारसी या अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दों के प्रयोग से बचने पर बल दिया। उनकी दृष्टि में पत्रकारिता की भाषा सरल, शुद्ध और जनसामान्य के लिए बोधगम्य होनी चाहिए। इस भाषायी अनुशासन ने हिंदी पत्रकारिता को व्यापक पाठक-वर्ग से जोड़ा और उसकी विश्वसनीयता बढ़ाई (नागर, 2008)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी की संपादकीय दृष्टि और अनुशासन ने हिंदी पत्रकारिता को एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया। उन्होंने संपादक को केवल व्यवस्थापक न मानकर वैचारिक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित किया। आज की हिंदी पत्रकारिता में भी भाषा-संस्कार, वैचारिक स्पष्टता और नैतिक उत्तरदायित्व के जो मानदंड दिखाई देते हैं, उनकी जड़ें द्विवेदी जी की संपादकीय परंपरा में ही निहित हैं।

GJMRR
Global Journal of Multidisciplinary Research and Reviews (GJMRR)
Open-Access, Peer-Reviewed, Double Blind, Multidisciplinary Online Journal
Volume 1, Issue 2, Year-2026

आलोचनात्मक मूल्यांकन

हालाँकि द्विवेदी जी की भाषा-शुद्धता की नीति को कुछ आलोचकों ने कठोर और सीमित कहा है, फिर भी यह स्वीकार किया जाता है कि उनके प्रयासों के बिना हिंदी पत्रकारिता का मानकीकरण संभव नहीं था। उन्होंने पत्रकारिता को साहित्यिक गरिमा और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा, जो आज भी प्रासंगिक है (शर्मा, 2018)।

हिंदी पत्रकारिता के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते समय यह स्पष्ट होता है कि उनका योगदान जितना व्यापक और ऐतिहासिक था, उतना ही वह बहस और विवेचना का विषय भी रहा है। द्विवेदी जी ने ऐसे समय में हिंदी पत्रकारिता को दिशा दी जब वह न तो भाषायी रूप से स्थिर थी और न ही वैचारिक दृष्टि से परिपक्व। सरस्वती पत्रिका के संपादन के माध्यम से उन्होंने पत्रकारिता को साहित्यिक गरिमा, वैचारिक अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व प्रदान किया, किंतु उनकी यह भूमिका केवल प्रशंसा तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें कुछ सीमाएँ और विरोधाभास भी दृष्टिगोचर होते हैं (मिश्र, 2012)।

द्विवेदी जी का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान हिंदी पत्रकारिता की भाषा का परिष्कार माना जाता है। उन्होंने खड़ी बोली हिंदी को पत्रकारिता की मुख्य भाषा के रूप में स्थापित किया और भाषा की अशुद्धियों, अनावश्यक उर्दू-फारसी शब्दावली तथा अव्यवस्थित शैली का विरोध किया। आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो यह प्रयास पत्रकारिता के मानकीकरण की दिशा में अत्यंत आवश्यक था, परंतु कई विद्वानों का मत है कि उनकी अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ भाषा नीति ने हिंदी को कुछ हद तक दुरूह और अभिजात बना दिया, जिससे जनसामान्य से दूरी भी उत्पन्न हुई (शर्मा, 2018)।

विषय-वस्तु के स्तर पर द्विवेदी जी ने पत्रकारिता को सामाजिक सुधार और नैतिक चेतना से जोड़ा। नारी शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण जैसे विषयों को उन्होंने गंभीरता से उठाया। यह उनकी दूरदर्शिता को दर्शाता है, किंतु आलोचक यह भी मानते हैं कि उनकी पत्रकारिता प्रत्यक्ष राजनीतिक प्रतिरोध की अपेक्षा नैतिक और बौद्धिक सुधार पर अधिक केंद्रित थी। इस कारण उनकी भूमिका को क्रांतिकारी के बजाय सुधारवादी पत्रकार के रूप में देखा जाता है (वर्मा, 2016)।

संपादकीय दृष्टि से द्विवेदी जी का अनुशासन अत्यंत कठोर था। वे लेखकों की रचनाओं में व्यापक संशोधन करते थे और गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं करते थे। इससे हिंदी पत्रकारिता में लेखन का स्तर अवश्य ऊँचा हुआ, परंतु कुछ आलोचकों का मत है कि इस कठोर संपादन प्रक्रिया ने रचनात्मक स्वतंत्रता को सीमित किया और वैकल्पिक दृष्टिकोणों के लिए कम स्थान छोड़ा (पांडेय, 2014)।

द्विवेदी युग को हिंदी पत्रकारिता का स्वर्णकाल कहे जाने के बावजूद यह भी सत्य है कि इस युग की पत्रकारिता मुख्यतः साहित्य-केंद्रित थी। समाचारात्मकता, जनसंवाद और तात्कालिक सामाजिक प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा वैचारिक और साहित्यिक विमर्श को अधिक महत्व दिया गया। आलोचनात्मक रूप से यह कहा जा सकता है कि इससे पत्रकारिता का आधुनिक, जनमुखी और संवादात्मक स्वरूप पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सका (नागर, 2008)।

महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका हिंदी पत्रकारिता के विकास में आधारशिला के समान रही है। उनकी सीमाओं और आलोचनाओं के बावजूद यह निर्विवाद है कि उन्होंने पत्रकारिता को भाषा-संस्कार, वैचारिक गंभीरता और सामाजिक उत्तरदायित्व प्रदान किया। उनकी दृष्टि ने हिंदी पत्रकारिता को एक बौद्धिक पहचान दी, जो आगे चलकर आधुनिक पत्रकारिता के विकास का आधार बनी (शुक्ल, 2010)।

निष्कर्ष

महावीर प्रसाद द्विवेदी हिंदी पत्रकारिता के शिल्पकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने पत्रकारिता को केवल सूचना का माध्यम न बनाकर, उसे भाषा-संस्कार, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना का साधन बनाया। *सरस्वती* के माध्यम से स्थापित द्विवेदी युग ने हिंदी पत्रकारिता को वैचारिक दृढ़ता, साहित्यिक गुणवत्ता और सामाजिक उत्तरदायित्व प्रदान किया। आज की हिंदी पत्रकारिता में भी उनके सिद्धांत और दृष्टि मार्गदर्शक के रूप में प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, नीलम. (2016). हिंदी पत्रकारिता में संपादकीय परंपरा. *मीडिया अध्ययन*, 11(2), 49–55।
2. अवस्थी, राजेंद्र. (2015). महावीर प्रसाद द्विवेदी का संपादकीय दृष्टिकोण. *मीडिया विमर्श*, 9(2), 58–64।
3. गुप्त, कमलेश. (2009). हिंदी पत्रकारिता में भाषा सुधार आंदोलन. *हिंदी पत्रकार*, 7(1), 14–20।
4. जोशी, रमेशचंद्र. (2013). *आधुनिक हिंदी गद्य के शिल्पकार*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. तिवारी, भोलानाथ. (2010). *हिंदी पत्रकारिता का विकास*. वाराणसी: विश्व विद्यालय प्रकाशन।
6. त्रिपाठी, नंदकिशोर. (2007). सरस्वती पत्रिका की भूमिका. *पत्रकारिता अध्ययन*, 4(3), 21–29।
7. त्रिपाठी, विजयमोहन. (2015). *सरस्वती और द्विवेदी युग*. प्रयागराज: साहित्य भवन।
8. दुबे, ओमप्रकाश. (2008). द्विवेदी युग और भाषा अनुशासन. *हिंदी भाषा विमर्श*, 6(4), 37–43।
9. द्विवेदी, म. प्र. (1903). *सरस्वती*. इलाहाबाद: इंडियन प्रेस।
10. द्विवेदी, म. प्र. (1913). *साहित्य की भूमिका*. प्रयाग: इंडियन प्रेस।

11. नागर, अमृतलाल. (2008). *हिंदी गद्य और पत्रकारिता.* वाराणसी: ज्ञानमंडल।
12. पांडेय, रामविलास. (2001). *हिंदी नवजागरण और पत्रकारिता.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
13. पांडेय, शिवकुमार. (2014). *द्विवेदी युग का साहित्यिक योगदान.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
14. पांडेय, श्यामसुंदर. (2002). *हिंदी गद्य और पत्रकारिता.* पटना: ज्ञान भारती।
15. मिश्र, रामकुमार. (2012). *हिंदी पत्रकारिता का इतिहास.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
16. मिश्र, शिवकुमार. (2005). महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी पत्रकारिता. *हिंदी साहित्य समीक्षा,* 12(2), 45–52।
17. मिश्रा, कैलाशनाथ. (2006). सरस्वती और सामाजिक सुधार. *भारतीय समाज अध्ययन,* 8(1), 66–72।
18. यादव, सुरेश. (2019). महावीर प्रसाद द्विवेदी और राष्ट्रीय चेतना. *हिंदी शोध पत्रिका,* 14(1), 18–24।
19. वर्मा, धर्मवीर. (2016). *भारतीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता.* दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
20. वर्मा, धीरेन्द्र. (2008). द्विवेदी युग और पत्रकारिता. *भारतीय भाषा शोध,* 6(1), 33–40।
21. शर्मा, प्रेमशंकर. (2011). *हिंदी पत्रकारिता: परंपरा और परिवर्तन.* जयपुर: साहित्य सदन।
22. शर्मा, सुधीर. (2018). *आधुनिक हिंदी पत्रकारिता: परंपरा और परिवर्तन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
23. शुक्ल, आ. रामचंद्र. (1999). *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नई दिल्ली: नागरी प्रचारिणी सभा।
24. शुक्ल, रामचंद्र. (2010). *हिंदी साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
25. श्रीवास्तव, अरुण. (2004). द्विवेदी युगीन चेतना और पत्रकारिता. *साहित्यिक शोध,* 5(2), 41–47।
26. सक्सेना, सुधीर. (2017). *भारतीय पत्रकारिता का इतिहास.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
27. सिंह, बच्चन. (2012). *आधुनिक हिंदी गद्य का विकास.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
28. सिंह, वीरेंद्र. (2014). महावीर प्रसाद द्विवेदी का पत्रकारिता योगदान. *जनसंचार समीक्षा,* 10(3), 25–31।